गाद की दर, जल के वार्षिक प्रवाह के अनुपात में जलाशय की भंडारण क्षमता भू-आकृतिविज्ञान संबंधी विशेषताएं जलवायु तथा जलाशयों के जल ग्रहण क्षेत्रों में भूमि उपयोग पैटर्न जैसे तथ्यों पर निर्भर करता है । गाद प्रवाह रोकने के लिए राज्य सरकारों द्वारा जल ग्रहण क्षेत्रों में वानिकी कार्य, जल विभाजनक प्रबंध परियोजनायें तथा भूमि संरक्षण उपाए शुरू किए गए हैं ।

श्री अनन्तराम जायसवाल : माननीय सभापति जी, इसी सदन में नवम्बर, 1988 की 20 तारीख के आपसास उस समय के विद्युत मंत्री श्री कल्पनाथ राय जी जो आज भी विद्युत मंत्री है न भाखड़ा के बारे में जलाशय के लाइफ एक्सपेटेंसी में एक उत्तर दिया था, एक प्रश्न का उत्तर दिया था । उस उत्तर में उन्होंने कहा था —

"For Dead Storage Levels: 260 years—For Live Storage Levels: 630 years".

अब न तो 630 साल रह गए और 260 रह गए, अब जवाब आया है कि भाखड़ा जलाशय की लाइफ 180 साल है । इससे आपकी पूरी फिगर्स संदिग्ध हो जाती हैं । मंत्री जी क्या पहले इस पर कुछ प्रकाश डालेंगे ? तब मैं अपना पूरक प्रश्न पूछूंगा ।

श्री विद्याचरण शुक्ल : यह तो बड़ बड़े जलाशयों का जीवनकाल बताया गया है यह हर एक साल में जो हमें बहुत से नए नए और अच्छे उपकरण मिलते हैं उनका उपयोग कर के हम पता लगाते हैं ।

पता लगाने के बाद जो वस्तुस्थिति सामने आती है उसका विवरण मैंने अपने इस बयान में दिया है । भविष्य में भी इसके बारे में माननीय सदस्य साहब मान सकते हैं कि जैसे जैसे हम लोगों के जानने की जो स्थिति है, जानने के लिए जो आवश्यक उपकरण होते हैं, किसी प्रकार से हम और ज्यादा नयी नयी चीजें समझ सकते हैं, नए उपकरण लगाते हैं, तो वैसे वैसे ही वास्तविकता के नजदीक हम लोग पहुंच जाते हैं । मैंने अभी आपको दर्शाया यदि हम लोग इस स्थिति की बरकरार रखना चाहते हैं तो बहुत से ऐसे उपाय हमको लेने पड़ेंगे जिसका कि सुझाव कमेटी ने दिया है जिसको इस खातिर बैठाया गया था जिससे कि जो अभी 180 वर्ष का इसका अनुमान है यह कम से कम कायम रह सके ।

श्री अनन्तराम जायसवाल : क्या यह दो तीन साल में ही आपको पता लगा ? उस स्थिति में और 80 की स्थिति में आज फर्क क्या हुआ जिससे यह इतना ढ़क गया, इसको ध्यान में लें ।

श्री विद्याचरण शुक्ल : जैसा मैंने आपसे कहा हम लोग हर साल पता लगाते रहते हैं । अभी बहुत आधुनिकतम संयंत्र मंगाए गए थे जिनके आधार पर इन सब बातों का पता लगाया गया । जैसा कि माननीय सदस्यगण समझ सकते हैं कि यह सब अभी मालूम है कि भविष्य में कितनी मिट्टी इन जलाशयों में इकट्ठी होगी या नहीं होगी । पूर्व में जैसा अनुमान लगाया गया था फिर वास्तविकता में क्या हुआ इसकी जांच करके, भविष्य में क्या होगा उसका अनुमान लगाकर और हर साल हर महीने कितनी सिल्ट इन जलाशयों में आती है उसकी जांच पड़ताल करके उसकी मात्रा का अनुमान लगाकर फिर इन सब बातों पर हम अपने विचार आपके सामने रखते हैं । मैं यह बताना चाहता हूं कि हम लोगों ने इस बात का प्रयास किया है कि इस तरह से हर जगह अनुमान लगाकर इस स्थिति को किस तरह से सुधारा जाए, इस पर भी हम लोग प्रयास करेंगे जिससे कि इस स्थिति से निपटने के लिए अर्थात जिस तरह से जलाशयों में यह सब मिट्टी इकट्ठी हो रही है इनका जीवन काल घटता जा रहा है, इनको बढ़ाने के लिए क्या उपाय किए जायें । इसके बारे में सोच विचार कर हम लोग कदम उठायेंगे ।

श्री अनन्तराम जायसवाल : अब पूरक प्रश्न ।

श्री सभापति : पूरक प्रश्न तो आ गए जनाब ।

श्री सभापति : दयानन्द सहाय से चलेगी । इनका कहना है दयानन्द सहाय से चलायेंगे क्या ?

SHRI MALLIKARJUN: Sir, as the House has already been informed, necessary things will be taken up. As just now the Minister also said, recurrence of such incidents would not be there in future. An educative drive has also been launched for the past one week for drivers and others. This incident occurred in between. In fact, the drive was launched on 22nd July. (*Interruptions*).

SHRI DAYANAND SAHAY:....I appreciate that this has happened. Can he go further?

श्री सभापति : यह भगवान सहाय है सब मामला । क्वेश्चन नम्बर 283 ।

SHRI TINDIVANAM G. VENKATRAMAN: Sir, I want just one minute.

MR. CHAIRMAN: No. I have called Question No. 283.

जलाशयों की आयु

*283. **श्री अनन्तराम जायसवाल :** क्या जल संसाधन मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) भाखड़ा नांगल समेत प्रत्यक बड़े जलाशयों की उनके निर्माण के समय अलग-अलग कितनी आयु कूती गई थी ;

(ख) क्या यह सच है कि इन जलाशयों में अत्याधिक गाद एकत्रित हो जाने के कारण यह आयु घट कर बहुत कम रह गई है, यदि हां, तो उसका जलाशय-वार ब्यौरा क्या है ; और

(ग) उपरोक्त जलाशयों में ऐसी अत्याधिक गाद एकत्रित हो जाने के क्या कारण हैं और उन्हें दूर करने के लिए उठाए गए कदमों का ब्यौरा क्या है ?

जल संसाधन मंत्री (श्री विद्याचरण शुक्ल) : (क) से (ग) विवरण सभा पटल पर रख दिया गया है ।

विवरण

(क) से (ग) देश में वृहद जलाशयों की 100 वर्ष आयु की योजना बनायी गयी है । देश में भाखड़ा जलाशय सहित कुछ वृहद जलाशयों की आयु नीचे दिए अनुसार आंकी गयी है :

बांध/जलाशय का नाम	जलाशय की अनुमानित आयु	क्षमता हानि का प्रतिशत	
		सक्रिय भंडारण	अवधि
1. मैथान (बिहार)	246 वर्ष	14.0	24 वर्ष (1955–79)
2. पोंग (हिमाचल प्रदेश)	100 वर्ष	3.35	12 वर्ष (1974–86)
3. तुंगभद्रा (कर्नाटक)	200–300 वर्ष	14.84	32 वर्ष (1953–85)
4. गांधी सागर (मध्य प्रदेश)	100 वर्ष	2.3	16 वर्ष (1960–76)
5. गिरना (महाराष्ट्र)	100 वर्ष	7.2	14 वर्ष (1965–79)
6. हीराकुंड (उड़ीसा)	400 वर्ष	14.5	27 वर्ष (1957–84)
7. भाखड़ा (पंजाब)	180 वर्ष	5.78	29 वर्ष (1957–85)

श्री अनन्तराम जायसवाल : ये पूरक नहीं हैं, यह तो सफाई थी। मेरा पहला प्रश्न है...

श्री सभापति : यह पहला नहीं यह आपका आखिरी है ।

श्री अनन्तराम जायसवाल : आखिरी तो हो ही नहीं सकता ।

MR. CHAIRMAN: I will not permit you. This is not your first supplementary.

श्री अनन्तराम जायसवाल : तो कई सवालों को एक साथ मिलाना पड़ेगा।

श्री सभापति : अनुपूरक पूछ लीजिए जल्दी से।

श्री अनन्तराम जायसवाल : माननीय मंत्री जी, गाद-जमाव की जिस दर का अनुमान लगाकर इन बड़े जलाशयों का निर्माण किया गया था उसके बारे में अब विशेषज्ञों की राय है कि उनमें कई गुने ज्यादा का फर्क आ गया है । मैं आपको कुछ उदाहरण बता देता हूं । पोंग में पांच गुने का फर्क हुआ, रामगंगा में चार गुने का फर्क हुआ, मयूराक्षी में छः गुने का फर्क और उसी तरह से मैथान में सात गुने का फर्क हुआ । इसको ध्यान में रखते हुए क्या आप यह बताने की कृपा करेंगे कि सिल्टेज की दर को कम करने के लिए भारत सरकार द्वारा क्या कार्यवाही की गयी है । चूंकि अब मौका नहीं मिलेगा इसलिए इसी के साथ दूसरा पूछना चाहता हूं । आपने अपने बयान में कहा है कि सिल्टेज को रोकने के लिए सारा काम राज्यों पर छोड़ दिया गया है, लगता है जैसे भारत सरकार का इससे कोई सरोकार नहीं है । मैं आपके ध्यान में लाना चाहता हूं कि बिहार सरकार ने कुछ इस तरह का काम किया था लेकिन उससे प्रत्याशित नतीजा नहीं निकला क्या यह आपकी जानकारी में है और चूंकि इन बांधों से हमको बिजली मिलती है, सिंचाई का पानी मिलता है और बाढ़ का पानी ये रोकते हैं, इन पर हमारा भविष्य निर्भर है इसलिए क्या सिल्टेज की दर को घटाने के लिए आपकी कोई योजना है, अगर है तो क्या है और जो अब तक भारत सरकार ने खर्च किया है इस पर वह धनराशि क्या है ?

श्री विद्याचरण शुक्ल : सभापति जी, इसके बारे में योजना बनायी गयी है और योजनाओं को लागू भी कर दिया गया है । जो योजना के मुख्य अंश हैं उनको मैं आपके सामने प्रस्तुत कर देता हूं । पहली बात यही मैंने बतायी कि किस तरह से उसमें कचरा आता है और किस तरह का सिल्टेज आता है और इसको रोकने के लिए क्या उपाय किये जायें ।

उस इलाके से जहां से कि यह सब सिल्टेज आता है वहां पर जंगल लगाकर, खेतीबाड़ी के ऊपर थोड़ा रोक लगा कर और उसके अलावा जो वहां पर ऐसे काम होते हैं जिससे कि जमीन गीली होती है और जमीन बह-बह कर के ज्यादा आती है, उसके लिए पूरी एक विवरण पत्रिका बना कर राज्यों को दी गई है और उनसे अनुरोध किया गया है कि वह उसको चलायें, क्योंकि माननीय सदस्य इस बात को जानते हैं कि राज्य सरकारों के पास गांव-गांव में, जोकि कैचमेंट एरिया में आते हैं, जहां से सिल्टेज आती है, वहां पर उनके पास काफी लोग मौजूद हैं, जिनके आधार पर वह इस तरह के काम कर सकते हैं । भारत सरकार तो उन सब जगहों पर इतने आदमी नहीं रख सकती, पर हम लोग इसके लिए सहायता देते हैं, उनको इस प्रकार का मार्गदर्शन देते हैं और इस प्रकार की आधुनिकतम वैज्ञानिक जानकारी देते हैं, जिससे कि सिल्टेज रोकने के लिए वह प्रयास कर सकें ।

इस बात के लिए मैं माननीय सदस्य को धन्यवाद देता हूं कि उन्होंने इस बात को यहां पर सभा में प्रस्तुत किया, जिससे कि और लोग इसके बारे में ज्यादा से ज्यादा जानकारी हासिल कर सकें और ज्यादा

सजग हो जायें, क्योंकि इस चीज में सजगता की बहुत आवश्यकता है और मैं चाहूंगा कि बार-बार इस बारे में सूचना मांगी जाए, जिससे कि सजगता राज्य सरकारों और आम लोगों में बढ़ती जाए।

श्री सभापति : उन्होंने कुछ स्पेसिफिक सवाल किये हैं । एक तो बिहार के बारे में और एक और जगह पर सिल्टिंग हो गया और उन्होंने सात गुना बढ़ाया । उसके बारे में आप कुछ बता सकते हैं या आपको नोटिस चाहिए, आप बतायें ।

श्री विद्याचरण शुक्ल : सभापति जी, यह तो विभिन्न तरह के अनुमान लोग लगाते हैं । जो मैंने अपने विवरण में अनुमान लगा कर दिया है....

श्री राम अवधेश सिंह : अनुमान ही है कि उसमें कुछ वैज्ञानिक जांच भी हो रही है ?

श्री विद्याचरण शुक्ल : यह सब वैज्ञानिक अनुमान है । पर अभी अनुमान से अधिक इसको किसी प्रकार से नहीं कहा जा सकता ।

बिहार सरकार से हम लोग इस बात को कहेंगे कि जो उससे अपेक्षा की गई है, जो उसको जिम्मेदारी दी गई है, वह सावधानीपूर्वक उसका निर्वाह करें ।

श्री अनन्तराम जायसवाल : सभापति जी, मेरा सवाल यह था...

श्री सभापति : मैंने आपका सवाल पूछ लिया था और उन्होंने उसका जवाब दे दिया है ।

श्री अनन्तराम जायसवाल : उन्होंने जवाब नहीं दिया ।

श्री सभापति : मैं क्या कर सकता हूं ।

श्री अनन्तराम जायसवाल : आप जवाब दिलवा दीजिए ।

श्री सभापति : मैंने आपके सवाल को दुबारा रिपीट कर दिया । उन्होंने कहा कि हमारी बात सही है । अब आपकी बात सही है या उनकी बात सही है, मैं क्या कहूं ।

श्री अनन्तराम जायसवाल : मान्यवर बिहार सरकार ने कुछ सिल्टेशन रोकने के लिए किये थे, लेकिन उसका प्रत्याशित नतीजा नहीं हुआ । वह फेल्योर साबित हुआ, क्या यह बात मंत्री जी की जानकारी में है ?

श्री सभापति : आपने बताया । वह बात जानकारी में आ गई । अब वह देखेंगे कि उसका फेल्योर न हो ।

श्री विद्याचरण शुक्ल : अधिकांश स्थानों पर जहां यह काम किये गये हैं, उनका संतोषप्रद नतीजा अभी नहीं निकला । उसमें मैं यह नहीं कहता कि फेल्योर हुआ है, पर जो प्रयास किये जाते हैं, यदि आशानुरूप उसके नतीजे नहीं निकलते हैं, तो हम और तरह-तरह के प्रयास करते हैं । पर इस तरह के काम के अलावा इसका कोई और दूसरा विकल्प नहीं है ।

श्री सभापति : आशानुरूप फल नहीं निकले ।

SHRI DAVID LEDGER: Sir, while talking of reservoirs, I would like to draw the attention of the hon. Minister to the recommendations made by the Brahmaputra Board in the year 1986 for construction of reservoirs on the Dihang, Subansiri and Tipaimukh rivers in Assam. Is any of these proposals receiving the attention of the hon. Minister?

SHRI VIDYACHARAN SHUKLA: Sir, these proposals must have been examined by the Ministry, but I have no seperate information on these three projects. If the hon. Member wants, I

will collect the information and convey it to him.

SHRI SUNIL BASU RAY: Sir, from the reply as it is, it appears that sufficient attention was not given in the reply for collection of figures. I am taking only the first one, Maithon in Bihar. Maithon dam is on the Barakar river and it is a part of the Damodar Command Area in which there are certain other reservoirs also as Tilaiya, Konar and Panchet. The proper functioning of these dams and reservoirs depends on the continuous flow of water in the lower Damodar which is often endangered by siltation on the upper stretch. Now, it has been given that there has been 14 per cent siltation in 24 years, that is up to 1979. What is the exact siltation rate at present? According to this figure, it is calculated that the present siltation rate would be 25 per cent or something like that. So, I would like to know what action has been taken by the Government for developing Damodar Command Area which has a tripartite body to administer it—Bihar, West Bengal and the Central Governments. On the full functioning of this reservoir depends hydro-electric generation, water supply to the industries and water supply to the villages.

MR. CHAIRMAN: Your question is about the Damodar Valley Corporation.

SHRI SUNIL BASU RAY: Yes, my question is about the Damodar Valley Corporation.

MR. CHAIRMAN: Your question is whether he will activise it so that it functions properly. That is your question.

SHRI SUNIL BASU RAY: Yes. I would like to know whether there is any programme for desiltation and improving the lower Damodar Valley Area. That is my first question.

SHRI VIDYACHARAN SHUKLA: Sir, the measure that has been taken to prevent siltation or sedimentation is common in respect of most of the major reservoirs. I have given some information. I will read it out again.

MR. CHAIRMAN: He is interested only in Maithon.

SHRI VIDYACHARAN SHUKLA: Sir, the measure taken in respect of Bhakra and other reservoirs is the same for Maithon because there is no special measure that has been taken separately for Maithon. In respect of all major reservoirs and big reservoirs in the country special measure has been taken which is common.

MR. CHAIRMAN: He says about the lower area of Damodar Valley.

SHRI VIDYACHARAN SHUKLA: For lower area if there is any dam he can mention specifically. I will look into that matter.

Conversion of Chandrapur-Gondia-Jabalpur NG Line into B.G. Line

*284. SHRI NARESH C. PUGLIA: Will the Minister of RAILWAYS be pleased to state:

(a) whether there is any proposal under Government's consideration for conversion of Chandrapur-Gondia-Jabalpur narrow gauge line into Broad gauge line;

(b) whether a survey for the purpose was undertaken first in 1969 and second time in 1980;

(c) whether it is also a fact that this line runs through Chandrapur-Gadchiroli and Bhandara districts which are economically backward districts of Vidarbha region though they are rich in mineral and forest wealth but due to lack of railway line into B. G. line and if so, reluctant to come to this area to tap the resources and set up new industries; and

(d) whether Government would take a decision for conversion of the above railway line into B. G. line and if so, by when the work is likely to commence?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF RAILWAYS (SHRI MALLIKARJUN): (a) No, Sir.